भारत - अंगोला संबंध

भारत और अंगोला के बीच अंगोला के स्वतंत्र होने के पहले से ही परंपरागत रूप से मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। भारत पुर्तगाली उपनिवेशी शासन के विरुद्ध अंगोला के स्वतंत्रता संग्राम को तब तक समर्थन प्रदान करता रहा जब तक कि 1975 में अंगोला ने आजादी हासिल नहीं कर ली। इसके बाद भारत ने अंगोला की मुक्ति के लिए लोकप्रिय आंदोलन (एम पी एल ए) का समर्थन करना जारी रखा जो अंगोला की आजादी के बाद से इस देश के कार्यों के केन्द्र में बना हुआ है। अंगोला तथा इसके नेतृत्व ने अतीत में भारत के निरंतर समर्थन की प्रशंसा की है तथा हाल के वर्षों में कृषि, उद्योग एवं प्रौद्योगिकी में भारत द्वारा की गई महत्वपूर्ण तरक्की से लाभ प्राप्त करने की आशा रखते हैं।

राजनीतिक संबंध

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने मई 1986 में अंगोला का दौरा किया था तथा 1979 से अंगोला के राष्ट्रपति श्री जोस इडुआरडो दोस संतोष ने अप्रैल 1987 में भारत का दौरा किया था। 19 वर्षों के अंतराल के बाद अंगोला के विदेश मंत्री श्री जोआओ बर्नार्डो डी मिरांडा ने मई 2006 में भारत का दौरा किया तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, पेट्रोलियम मंत्री तथा तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा के साथ उपयोगी बैठकें की। उन्होंने प्रधानमंत्री से भी मुलाकात की। इस यात्रा के दौरान विदेश कार्यालय परामर्श पर एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया गया। दोनों पक्ष निवेश के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए करार तथा सांस्कृतिक, तकनीकी, वैज्ञानिक एवं आर्थिक सहयोग के लिए द्विपक्षीय आयोग के सृजन के लिए करार पर हस्ताक्षर करने के लिए भी सैद्धांतिक रूप से राजी हुए। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 10 जुलाई 2009 को लाकिला, इटली में जी-8 की बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में अंगोला के राष्ट्रपति जोस इडुआरडो दोस संतोष से मुलाकात की।

तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा ने 8 और 9 जून 2007 को अंगोला का दौरा किया तथा अंगोला के राष्ट्रपति, विदेश मंत्री, पेट्रोलियम एवं भू विज्ञान तथा खान मंत्री, इंडियामा के अध्यक्ष एवं सत्ताधारी एम पी एल ए पार्टी के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के राजनीतिक ब्यूरो के सचिव (अंगोला के पूर्व विदेश मंत्री) के साथ विस्तार से चर्चा की। 10 सदस्यीय शिष्टमंडल के साथ तत्कालीन वाणिज्य राज्य मंत्री श्री जयराम रमेश ने 28 मार्च से 1 अप्रैल 2008 के दौरान अंगोला का दौरा किया तथा भू विज्ञान, खान एवं तेल मंत्री, उप विदेश मंत्री, इंडियामा के अध्यक्ष तथा वाणिज्य मंत्रालय के राष्ट्रीय निदेशक के साथ चर्चा की। तेल एवं गैस पी एस यू एवं अन्यों के एक शिष्टमंडल के साथ तत्कालीन पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री मुरली देवड़ा ने दोनों देशों के बीच तेल एवं गैस क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए

जनवरी 2010 में अंगोला का दौरा किया। हाल के वर्षों में तेल एवं गैस क्षेत्र में सहयोग की संभावना का पता लगाने के लिए रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, एच पी सी एल मुंबई, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड तथा मित्तल इनवेस्टमेंट यू के लिमिटेड ने लुआंडा का दौरा किया। तेल एवं गैर तेल दोनों क्षेत्रों में अंगोला में भारत से निजी क्षेत्र के निवेश, व्यापार एवं व्यवसाय को प्रोत्साहित करने एवं बढ़ावा देने की जरूरत है।

अंगोला की ओर से भारत की अन्य उल्लेखनीय यात्राओं में निम्नलिखित शामिल हैं : (i) इंडियामा के अध्यक्ष डा. मैनुअल कलाडो (अक्टूबर 2006 और अप्रैल 2007); (ii) अंगोला के प्रधानमंत्री कार्यालय में सहायक मंत्री श्री एग्विनाल्डो जेमी; (iii) सत्ताधारी एम पी एल ए पार्टी के राजनीतिक संबंधों के राजनीतिक ब्यूरो के सचिव श्री पाउलो टी जार्ज; (iv) उद्योग मंत्री श्री जोक्विम दुराते दा कास्टा डेविड; (v) तत्कालीन कृषि मंत्री श्री गिलबर्टो बूटा लुटकुटा; (vi) उप स्वास्थ्य मंत्री (सितंबर 2001) और नई दिल्ली में एवियन और पैंडेमिक इनफ्लुएंजा पर आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए दिसंबर 2007 में भी; (vii) एस ए डी सी मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष तथा योजना मंत्री (जुलाई 2003); (viii) उप उद्योग मंत्री श्री अब्राहो पायो दोस संतोष गैरगेल (अगस्त 2005) और अंगोला के राष्ट्रपति के बेटे श्री जोस इडुआरडो जु दु पी दोस संतोष की मई 2007 और फरवरी 2008 में दो निजी यात्राएं; (ix) अक्टूबर 2010 में नई दिल्ली में पेट्रोटेक सम्मेलन में भाग लेने के लिए पेट्रोलियम मंत्री श्री जोस मारिया बोटेल्हो डी वासकोनसेलोस; (x) अखिल अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना का आकलन करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं दूर संचार मंत्रालय से एक शिष्टमंडल (ई-गवर्नेंस) दिसंबर 2010; और नई दिल्ली में भारत - एल डी सी मंत्री स्तरीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री श्री जार्ज आर चिकोटी (फरवरी 2011)।

भारत की ओर से अंगोला की उल्लेखनीय यात्राओं में निम्नलिखित शामिल हैं : (i) तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री श्री एडुआर्डो फलेरियो (अक्टूबर 1986); (ii) तत्कालीन वाणिज्य राज्य मंत्री श्री ए श्रीधरन (1990); (iii) माननीय संसद सदस्य (राज्य सभा) श्री महेंद्र प्रसाद (सितंबर 2003); (iv) फिक्की शिष्टमंडल (सितंबर, 2005); (v) रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद का शिष्टमंडल (नवंबर, 2006); (vi) तेल पी एस यू से शिष्टमंडल (सितंबर 2010); (vii) एम एम टी सी लिमिटेड से शिष्टमंडल (नवंबर 2010), (viii) भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य कार्यपालक श्री एम जी वैद्य की यात्रा (जनवरी 2011), और गेल इंडिया से शिष्टमंडल (मई 2011)। हाल के वर्षों में अनेक निजी कारोबारी शिष्टमंडलों, जिसमें मई 2014 में फिक्की और नवंबर 2013 में सी आई आई द्वारा भेजे गए निजी कारोबारी शिष्टमंडल शामिल हैं, ने भी अंगोला का दौरा किया है जिससे द्विपक्षीय आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध निरंतर सुदृढ़ हुए हैं। विदेश राज्य मंत्री जनरल डाक्टर वी के सिंह (सेवानिवृत्त) ने अक्टूबर 2015 में नई दिल्ली में होने वाली तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक के लिए

निमंत्रण सौंपने के लिए भारत के प्रधानमंत्री के विशेष दूत के रूप में 15 जुलाई 2015 को लुआंडा का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अंगोला के उप राष्ट्रपति श्री मैनुअल विसेंटी से मुलाकात की और विदेश मंत्री श्री जार्ज चिकोटी के साथ बैठक की।

अक्टूबर 2015 में अंगोला के उप राष्ट्रपति श्री मैनुअल विसेंटी ने तीसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। उनके साथ एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल भी आया था जिसमें विदेश मंत्री, कृषि मंत्री, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार मंत्री शामिल थे। उप राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री के साथ द्विपक्षीय बैठक की। कृषि मंत्री ने अपने भारतीय समकक्ष के साथ बैठक की। ओ एन जी सी विदेश लिमिटेड के प्रबंध निदेशक के साथ पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री ने ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा करने के लिए उप राष्ट्रपति से मुलाकात की। विदेश मंत्री श्री जार्ज चिकोटी ने विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ भी द्विपक्षीय बैठकें की।

आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध

अंगोला में गृह युद्ध समाप्त हो जाने के बाद अंगोला के साथ भारत के व्यापार में स्पष्ट वृद्धि हुई है। अंगोला से भारत के आयात में काफी वृद्धि दर्ज की है तथा यह 2009-10 में 4242.79 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2012-13 में 7157 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया और इस समय (2014-15 में) यह 4617 मिलियन अमरीकी डालर के आसपास है जिसका बुनियादी कारण कच्चे तेल की थोक में खरीद है। दूसरी ओर अंगोला को भारत का निर्यात 2010-2011 में 675 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2014-15 में 552 मिलियन अमरीकी डालर हो गया है। कुल व्यापार जो वर्ष 2009-2010 में 4877.85 मिलियन अमरीकी डॉलर था, वर्ष 2014-2015 में बढ़कर 5169 मिलियन अमरीकी डॉलर हो गया है। वास्तव में भारत अंगोला का तीसरा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार बन गया तथा अंगोला के विदेश व्यापार में इसका शेयर 15 प्रतिशत के आसपास है। पिछले 5 वर्षों के लिए आंकड़े निम्नानुसार हैं :

भारत से अंगोला को निर्यात / भारत द्वारा अंगोला से आयात

(मिलियन अमरीकी डालर में)

	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
आयात	5112	6625	7157	5992	4617
निर्यात	675	454	488	536	552
कुल	5787	7079	7645	6528	5169

उप सहारा अफ्रीका में नाइजीरिया के बाद भारत के लिए अंगोला कच्चे तेल का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत बना रहा। गेल तथा अन्य भारतीय कंपनियों ने अंगोला से एल एन जी के आयात में रुचि प्रदर्शित की हैं। भारत द्वारा निर्यात की वस्तुओं में मुख्य रूप से ट्रैक्टर एवं परिवहन वाहन, कृषि मशीनरी एवं औजार, खाद्य एवं मांस उत्पाद, फार्मास्युटिकल तथा कास्मेटिक्स, चाय, चावल (बासमती), स्पिरिट एवं बिवरेज, निर्मित लेदर, कागज / लकड़ी के उत्पाद आदि शामिल हैं।

भारत सरकार ने सी एफ एम रेलवे पुनर्वास परियोजना के लिए अंगोला सरकार को 40 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता प्रदान की जो दोनों देशों एवं रेल इंडिया टेक्निकल एंड इकोनामिक्स कंसल्टेंसी सर्विसेज (राइट्स) लिमिटेड के बीच पहली सरकार दर सरकार पहल है जिसने 2005 में परियोजना का कार्यान्वयन शुरू किया तथा 28 अगस्त 2007 को अंगोला के परिवहन मंत्री को परियोजना सौंपी।

भारत के आयात - निर्यात बैंक ने कृषि उपस्कर तथा भारतीय ट्रैक्टरों के लिए 5,10 और 13 मिलियन अमरीकी डालर की तीन ऋण सहायता प्रदान की। अंगोला द्वारा इन लाइन्स ऑफ क्रेडिट का उपयोग कर लिया गया है। एक कॉटन स्पिनिंग और गिनिंग प्लांट तथा एक औद्योगिक पार्क के निर्माण के लिए 2010 में आयात - निर्यात बैंक द्वारा 30 और 15 मिलियन अमरीकी डालर की दो अतिरिक्त ऋण सहायता अनुमोदित की गई। ये परियोजनाएं चल रही हैं। इसके अलावा जून 2012 में भारत के आयात - निर्यात बैंक ने ट्रैक्टरों, उपस्करों तथा संबंधित पुर्जों की आपूर्ति के लिए अंगोला सरकार को 23 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता प्रदान की।

भारतीय स्टेट बैंक जिसने अप्रैल 2005 में लुआंडा में अपना प्रतिनिधि कार्यालय खोला था, ने भी भारत से ट्रैक्टरों की आपूर्ति के लिए 5 मिलियन अमरीकी डालर की वाणिज्यिक ऋण सहायता प्रदान की।

सद्भाव के रूप में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने मैसर्स महिंद्रा एण्ड महिंद्रा द्वारा निर्मित पांच एंबुलेंस को अंगोला सरकार को उपहार के रूप में प्रदान किया जिसे 6 दिसंबर 2005 को तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डा. सेबास्टियाओ सपूलियो वेलोसो की उपस्थिति में तत्कालीन परिवहन मंत्री श्री आंद्रे लुइस ब्रांडाओ को सौंपा गया।

मिशन के लगातार प्रयासों की वजह से 2010 में आई टी ई सी छात्रवृत्तियों के स्लाटों का इष्टतम उपयोग हुआ जिसकी वजह से विभिन्न पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए अंगोला अपने 60 अधिकारियों को भारत भेज रहा है। तथापि भाषा संबंधी समस्याओं के कारण

अंगोला के लिए आवंटित आई टी ई सी स्लाटों का उपयोग नहीं हो पाता है या बहुत ही कम उपयोग हो पाता है। 2014-15 में एक भी स्लाट का उपयोग नहीं हुआ। भारत अवर स्नातक / स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए अंगोला के छात्रों को 30 आई सी सी आर छात्रवृत्तियों की पेशकश कर रहा है। इन छात्रवृत्तियों का हर साल सक्रियता से उपयोग किया जा रहा है।

आई ए एफ एस प्रक्रिया : 2010 में पहली भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक के तहत प्रस्तावित अखिल अफ्रीका ई-कनेक्ट परियोजना में अंगोला अभी तक शामिल नहीं हुआ है, हालांकि अंगोला के संगत प्राधिकारियों ने हाल ही में भारत के लिए एक तकनीकी मिशन का प्रस्ताव करके इस परियोजना में अपनी रुचि प्रदर्शित की है। इसके अलावा भारत ने 2011 में दूसरी भारत - अफ्रीका मंच शिखर बैठक के निर्णय के तहत अंगोला में एक खाद्य प्रसंस्करण व्यवसाय इनक्यूबेशन केन्द्र स्थापित करने का प्रस्ताव किया था। सितंबर 2013 में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के शिष्टमंडल ने लुआंडा का दौरा किया तथा इस परियोजना में अंगोला द्वारा अंतत: रुचि प्रदर्शित किए जाने के बाद परियोजना पर तकनीकी चर्चा की।

भारतीय समुदाय एवं निवेश : अंगोला में भारतीय समुदाय की संख्या मात्र 500 के आसपास है जो मुख्य रूप से व्यवसाय करते हैं तथा आफशोर ऑयल फील्ड में पेशेवर के रूप में काम करते हैं। अब से दो साल पहले भारतीय समुदाय की संख्या 3000 के आसपास थी जिसमें से अधिकांश कैटरिंग, सुपर मार्केट, ट्रेडिंग एवं अन्य सेवाओं से जुड़े थे; प्लास्टिक, मेटल, स्टील, गारमेंट आदि जैसे उद्योगों, सोयो प्रांत में एल एन जी परियोजना तथा ई टी ए स्टार ग्रुप द्वारा सुंबे में निर्मित एक सीमेंट प्लांट में काम करते थे। अंगोला में भारतीय मूल के व्यक्तियों की संख्या काफी है जिनके पास विभिन्न राष्ट्रीयताओं के पासपोर्ट हैं। उनकी अनुमानित संख्या 4000 के आसपास है जिनमें से अधिकांश ट्रेडिंग और कंस्ट्रक्शन के व्यवसाय में हैं। अंगोला में भारतीय कारोबारियों द्वारा निवेश मूलत: भाषा संबंधी बाधाओं, दूरी, खास कारोबारी आचार जैसे कारकों तथा व्यवसाय वीजा से संबंधित जटिल प्रक्रियाओं एवं वर्क परमिट से संबंधित मुद्दों के कारण हतोत्साहित है। हाल के वर्षों में विदेशी मुद्रा भंडार के घटने के कारण स्थानीय प्राधिकारियों ने डालर / विदेशी मुद्रा के प्रत्यर्पण पर प्रतिबंध लगा दिया है जो रुकावट पैदा करने वाला एक अन्य कारक बन गया है।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, लुआंडा की वेबसाइट :
http://www.indembangola.org/

भारतीय दूतावास, लुआंडा का फेसबुक पृष्ठ:
https://www.facebook.com/pages/Embassy-of-India-Luanda/209463462473631

***

जनवरी, 2016